Swar Sindhu: National Peer-Reviewed/Refereed Journal of Music
A UGC CARE listed Journal
ISSN 2320–7175 (O) | Volume 12, Issue 01, January-June, 2024
http://swarsindhu.pratibha-spandan.org © The Author(s) 2024

संगीत में लय का प्रायोगिक स्वरूप: एक विवेचनात्मक अध्ययन

TEKESHWAR BISEN[1], DR. SANTOSH NAMDEV[2]
1 Research Scholar, Department of Music (Tabla), Dev Sanskriti Vishwavidyalaya, Haridwar, Uttrakhand
2 H.O.D. and Associate Professor, Department of Music (Tabla), Dev Sanskriti Vishwavidyalaya, Haridwar, Uttrakhand

सार: *लय का जीवन में विशेष स्थान है, जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में लय का ही महत्व है। सृष्टि की प्रत्येक क्रिया लय पर आधारित है। जीवन एक लयबद्ध आधार पर निर्भर है। लयबद्ध जीवन से ही स्वास्थ्य, सुख शांति एवं जीवन आनन्द संभव है। संगीत की तीनो विधाओ गायन वादन और नृत्य के सम्मलित स्वरूप को संगीत कहस गया है। जिसके मुख्य तत्व है स्वर और लय। लय संगीत का प्राण है, जिसके अभाव में संगीत निष्प्राण शारीर के सामान है। संगीत की तीनो विधाओ में कलाकार अपनी कुशलता के अनुसार लय का प्रयोग करता है। कलाकार जब अपनी कलात्मकता द्वारा एक लय को आधार मानकर विभिन्न प्रकार की लायकरियो से क्रमबद्ध रूप से प्रस्तुत करता है, और उतनी ही कुशलता से सम या मुखड़ा में मिलता है तब वह उतना ही लयकार समझा जाता है। लयकारी द्वारा केवल चमत्कार प्रदर्शन ही नहीं होता बल्कि आनन्द की वृद्धि भी होती हैं। प्रत्येक घरानों के लय के अपने नियम हैं। प्रस्तुत शोध पत्र में संगीत की तीनों विधाओ में लय के प्रयोगिक स्वरूप को प्रस्तुत करने का प्रयास शोधकर्त्ता द्वारा किया जा रहा है।*

कुंजी शब्द: *संगीत, प्राण, लय, कलाकार, लयकारी।*

प्रस्तावना

प्राचीन काल में संगीत के स्थान पर 'गान्धर्व'शब्द का प्रयोग मिलता है ।वाल्मीकीय 'रामायण' में लव-कुश के रामायण गान के लिए'गान्धर्व' शब्द का प्रयोग मिलता है, जो गीत और वाद्य के लिए ही है। भरत मुनि ने भी 'गान्धर्व' शब्द का प्रयोग गीत और वाद्य के लिए ही किया है। आज भी 'संगीत' शब्द का प्रयोग प्रायःगीत और वाद्य के लिए ही होता है। 'नारदीय शिक्षा'में 'गान्धर्व'शब्द का अर्थ दिया है -

गेतिगेयंविदुःप्राज्ञाधेतिकारुप्रवादनम्।

वेतिवाद्यस्यसंज्ञेनगान्धर्वस्यविरोचनमिति।।

अर्थात् - 'गान्धर्व'शब्दमें 'ग'गेय का प्रतीक है, 'ध' वादन का प्रतीक है और 'व' वाद्य यन्त्रों का प्रतीक है।

'संगीत' की आज जो परिभाषा शास्त्रीय दृष्टि से प्रचलित है, वह 'संगीत- रत्नाकर'के 'गीतं वाद्यं तथा नृत्यं त्रयं संगीतमुच्यते' इस उद्धरण से अधिक प्रचलित हुई है। 'संगीत-रत्नाकर'केबादकेअन्य ग्रन्थों- 'संगीत-दर्पण', 'संगीत-मकरन्द', 'संगीत-पारिजात'आदि में 'रत्नाकर'से प्रभावित परिभाषाएँ ही उपलब्ध हैं। उदाहरणार्थ -

गीतंवाद्यनर्तनञ्चत्रयंसंगीतमुच्यते।

(संगीत-दर्पण, 1-3)

गीतवादित्रनृत्यानांत्रयंसंगीतमुच्यते।

गानस्याऽत्रप्रधानत्वात्तच्छङ्गीतमितोरितम्।।

\- (संगीत-पारिजात, श्लोक, 20)

गीतंवाद्यचनृत्यंचत्रयंसङ्गीतमुच्यते ।

नारदेनकृतंशास्त्रंमकरन्दाख्यमुत्तमम् ।।

\- (संगीत-मकरन्द, प्रथमपाद, श्लोक 3)

Swar Sindhu: National Peer-Reviewed/Refereed Journal of Music
A UGC CARE listed Journal
ISSN 2320–7175 (O) | Volume 12, Issue 01, January-June, 2024
http://swarsindhu.pratibha-spandan.org © The Author(s) 2024

उपर्युक्त प्रमाणों से प्रतीत होता है कि प्राचीन काल से जिसे गान्धर्व कहा जाता था। वर्तमान में संगीत शब्द से सम्बोधित किया जाता है, जो कि गायन, वादन तथा नृत्य तीनों का घोतक हैं।

संगीत के आधार – स्वरऔर लय

परमात्मा ने जब सृष्टि की उत्पत्ति की तब पाँच तत्वो में सर्वप्रथम आकाष की उत्पत्ति हुई ।आकाश का धर्म है शब्द अर्थात स्वर । तत्पश्चात समस्त सृष्टि को एक लय में बांध दिया। पृथ्वी अपने निश्चित समय में धुरी पर एक चक्कर लगाती है तथा सूर्य, चन्द्र, नक्षत्र एवं सभी ग्रहों की लय निश्चित है। यदि इनकी लय में अन्तर पड़ जाये तो उसका एक ही परिणाम है- सृष्टि का महाप्रलय। इस प्रकार हम देखते हैं कि स्वर एवं लय दोनों अनादि हैं। लय के द्वारा ही संगीत को आकार प्राप्त होता है। इस प्रकार स्वर औ रलय संगीत के महत्वपूर्ण तत्व हैं।

स्वर

अनादि ॐकार की थरथराहट के ऊचे-नीचे आरोह अवरोह का ध्यान रखते हुए तत्व ज्ञानियों ने उसे सप्त स्वरो में विभाजित किया ।स, रे, ग, म, प, ध, नि उसी ॐकार ध्वनि का वर्गीकरण है। इन्ही स्वरों में समग्र स्वरशास्त्र का आभिर्भाव हुआ और उसके उदाहरण प्रस्तुत करते हुए अनेक राग-रागिनियों का प्रादुर्भाव हुआ। इन्ही स्वरों की क्षेत्रीय ध्वनि प्रियता के आधार पर अनेक वाद्ययंत्रो का निर्माण हुआ। गले का क्रमबद्ध गुंजन गायन और वाद्य यंत्रो की सहमति को वादन कहा गया। गायन और वादन को मिलाकार समग्र संगीत बनता है।

संगीत शास्त्रकार प्राचीन समय से ही संगीतोपयोगी मुख्य नाद एक सप्तक में 22 मान ते चले आ रहे हैं। जिनको शास्त्रो में श्रुति कहा गया है। इन 22 नादों से ही गायन के लिए उपयोगी सात स्वरों की उत्पत्ति हुई है। ये नाद क्रमशः उच्च से उच्चतर होते हैं जिन पर संवाद सिद्धांत के आधार पर सप्तक के निश्चित स्वरों को प्राप्त किया जाता है। गायन उपयोगी मुख्य स्वर सात हैं। इस प्रकार नाद से स्वर, स्वर से सप्तक तथा सप्तक से ठाठ यह हमारी संगीत पद्धति का क्रम है।

साधारणतःजब कोई ध्वनि नियमित और आवर्त कम्पन्नों से मिलकर उत्पन्न होती है, तो उसे स्वर कहते हैं। यही ध्वनि संगीत के काम में आती हैं। जो कानो को मधुर लगती है तथा चित्त को और प्रसन्न करती है। इस ध्वनि को संगीत की भाषा में नाद कहते हैं। इस आधार प रसंगीतोपयोगी नाद स्वर है।

लय

लय का सम्बन्ध गति से होता है। गति का सम्बन्ध समय काल से होता है। समय काल को नापने के लिए क्रिया का प्रयोग किया जाता है। दो क्रियाओ के मध्य से समय को मात्रा कहा जाता हैं। इन क्रिया तथा मात्राओं द्वारा तालों की निर्मिति होकर संगीत को निबद्ध किया जाता है। जिस से संगीत रंजक होता है, मार्गी द्वारा यति उत्पन्न कर जोग गति प्राप्त होती है उसे लय कहते है।

"नानामार्गलयोअत्रयतीनांस्यात्फलानिधि"

- संगीतरत्नाकार

लय से मात्रा का निर्माण होता है और मात्रा से ताल का।ताल ही सत्यं, शिवम्, सुन्दरम्है । ताल ही ईश्वर का सत्य स्वरूप है और ताल ही जीवन का वास्तविक सम्बल है। यही कारण है कि हमारे पूर्वजों ने ताल के अभिन्न अंग संगीत के सृष्टि-कर्ता परब्रह्मपरमात्मा का स्वरूपमान कर लिखा है–

खिलताहैजहां, गीतवाद्य, नृत्यकापद्म।

सतजनवहीहैऔरजगतईश्वरकासद्म।।

Swar Sindhu: National Peer-Reviewed/Refereed Journal of Music
A UGC CARE listed Journal
ISSN 2320–7175 (O) | Volume 12, Issue 01, January-June, 2024
http://swarsindhu.pratibha-spandan.org © The Author(s) 2024

लय के प्रकार

क्रियानंतरविश्रातिर्लयःसत्रिविधास्मृताः।

द्रुतोमध्योविलम्बधृतःशीघ्रतमोगतः।।

- नाट्यशास्त्र

नाट्यशास्त्र में लय को परिभाशित करते हुए भरत ने लिखा है कि दो कलाओं के मध्य का समय जिस आधार पर मात्रा का निर्माण होता है लय होगी।

"तालकालक्रियामानंलयःसाम्य"

- अमरकोष

अर्थात-क्रिया द्वारा मापा गया काल (ताल)साम्य होने पर 'लय'होगी।

संगीत शास्त्र में गायन वादन तथा नृत्य की क्रिया में नियमित रूप से नियमितसंख्या के माध्यम से निश्चित किए हुए समय को लय कहते हैं।

गीतंगाद्यंतथानृत्यंतालवज्यंनशोभते।

तालाभावात्रमेलःस्यादमेलादव्यवयस्थिति।

नरंगमव्यस्थातोविनारंगकृतोलयः।

लयंबिनानसौख्यंस्याततन्मूलेतालउच्चते।।

संगीतोपनिशद, सारोद्वार: आचार्यसुधाकलश

अर्थात गायन, वादन तथा नृत्य ताल के अभाव में शोभित नहीं होते। बिना ताल के अभाव में शोभित नहीं होते। बिना ताल के मेल (मिलन-आनंद) सम्भव नहीं। इस प्रकार बेमेल से लय उत्पन्न नहीं होती। यहाँ लय शब्द का अर्थ 'लीयतेयस्मिन' अर्थात लीन हो जाने से ही लय के बिना कुछ नहीं जो ताल से प्राप्त होती है। संगीत मूल तत्व मनोरंजन होता है और लय-ताल से रंग कल्पन के वल प्राप्त होता है बल्कि इसमें कई गुना वृद्धि हो जाती है। इस प्रकार लय संगीत के रंजकत्व की संरक्षक मानी जाती है। इसलि ये लय को पिता की उपमा दी जाती है। स्वर (श्रुति)संगीत की जननी है तो लय संरक्षक। उसी महत्व के कारण यह कहावत है कि 'श्रुतिःमातालयःपिता।'

संगीत की विधाओं में लय का प्रयोग

लय के विभिन्न आयाम है, जिसमें गायन, वादन एवं नृत्य प्रमुख हैं।

गायन

शास्त्रीय संगीत की इस विधा में रागस्वर एवं लय-ताल का सुन्दर सयोजन कर प्रस्तुत किया जाता है। शास्त्रीय गायन के अन्तर्गत ख्याल गायन एवं ध्रुपद गायन शैली आते हैं। ख्याल गायन के साथ तबला एवं ध्रुपद गायन शैली के साथ पखावज वाद्य की संगत की जाती है।

ख्याल गायन के साथ संगत-ख्याल गायन के अन्तर्गत विलम्बित, मध्य एवं द्रुत लय की रचना गाई जातीहै। विलम्बित लय की रचना को बड़ा ख्याल एवं मध्य द्रुत लय की रचना को छोटा ख्याल कहा जाता है। बड़ा ख्याल विलम्बित एकताल, झूमराताल, तिलवाड़ा आदि तालों में गाया जाता है। तीन ताल रूपकताल एवं झपताल में भी बड़ा ख्याल सुना जाता है, परन्तु इन तालों की लय इतनी विलम्बित नहीं होती है जितनी एकताल, झूमरा एवं तिलवाड़ा ताल की रहती है। बड़े ख्याल की रचना का मुखड़ा एक मात्रा से लेकर चार मात्रा तक का होता है। मुखड़े की मात्रा की संख्या बड़े ख्याल की लय प्रायः 2 मात्रा में एक मात्रा की ही रहती थी एवं अभी भी आगरा एवं ग्वालियर घरानों में विलम्बित ख्याल की लय भी यही रहती है। अतः इन रचना ओं में मुखड़ा दो मात्रा से चार मात्रा तक का होता है। ख्याल के

घराना एवं इन्दौर घराने बड़े ख्याल की लय अतिविलम्बित रहती है, आगरा एवं ग्वालियर घराने की अपेक्षा आधी लय ।इसमें चार मात्रा की एक ताल एवं ग्वालियर एवं आगरा घराने की विलम्बित लय के ठेके को चौबी समात्रा की एकताल भी सामान्य भाषा में कहा जाता है। तबला वादक को बड़े ख्याल के साथ ताल का ठेका बोलो के भराव के साथ बजाना होता है। बोलो का भराव ऐसा हो कि ताल की प्रत्येक मात्रा स्पष्ट हो एवं गायक को किसी प्रकार की असुविधान हो।

तबला वादन

एकाकी वादन में रेलों, गतों और कायदों द्वारा सुन्दरता पैदा की जाती है।इ न सब में कायदों को अधिक महत्त्व दिया जाता है। इन कायदों में तनिक हेर-फेर के साथ एक प्रकार के ही बोल बजाए जाते हैं। यह परिवर्तन इतनी सुन्दरता से किए जाते हैं कि बँधे हुए बोलों की पुनरावृत्ति अप्रिय प्रतीत होने की अपेक्षा बहुत सुन्दर लगती है। कुछ उस्ताद तो एक ही कायदे के बलखोल ने में, अर्थात् उनकी लौट-पलट करने में अधिक-से-अधिक समय लगा देते हैं। कायदों में बोलों के अतिरिक्त लय का भी हेर-फेर रहता है। इसी आधार पर दिल्ली के नत्थू खाँ साहब का बाज 'कायदे का बाज'के नाम से प्रसिद्ध है। इस में पहले विलंबित लय में पेशकार, फिर कायदे, फिर उस में पलटे बजाएजा ने की प्रथा है। इसके उपरांत लय को मध्य कर के गत, परन तथा चक्रदार गतें बजाई जाती हैं। अन्त में लय द्रुत करके रेले तथा अन्य गतें बजाकर वादन समाप्त किया जाता है; लेकिन पूरब-बाज में एक लंबी उठान के बाद परन, टुकड़े और चक्रदारों को अधिक महत्त्व दियाजाता है।

एकाकी वादन में दो बातों की ओर विशेषध्यान दिया जाता है। प्रथम यह कि लय प्रारंभ में विलंबित होकर क्रम से बढ़ती रहती है। द्वितीय यह कि बोलों का चयन इस ढंग से कियाजाता है कि एक के बाद दूसरा बोल प्रभावोत्पादक आता रहे। कहींऐ सा न हो कि उत्तम्बोल प्रारंभ में ही बज जाएँ और उन के बादउनसेउत्तम बोलअन्त तक न आएँ।

नृत्य

नृत्य कार अपने नृत्य का आरम्भ विलम्बित लय से ही करता है जिसमें सर्व प्रथम आमद प्रस्तुत करता है जिस के बोल विलम्बित अथवा मध्य लय के होते हैं। तबला वादक बोल एवं लय के समरूप इसके साथ तबले पर संगत करता है। विलम्बित एवं मध्य लय में टुकडे, चक्करदार टुकड़े, स्तुति परन, क वित्त आदि प्रस्तुत करने के पश्चात मध्य लय में गत- भाव (अर्थात गति के साथ भाव) प्रस्तुत करता है। इसमें पद संचालन कहरवा ताल की चाल रआधारित होता हैं। द्रुत लय में ततकार भी नृत्य का अंग है जिसमें दोनों पैरो की सहायता से विभिन्न प्रकार के लय स्वरूप बनाए जाते हैं। इसमें तबला वादक नृत्य कारके साथ-साथ ही संगत करता है। नृत्य में इस द्रुत लय में ततकार के बीच नृत्य का र एवं तबला वादक के मध्य सवाल जवाब भी होता है। यह ठीक उसी प्रकार होता है जैसा कि सवाल जवाब पं०रविशंकर द्वारा तंत्र वाद्य में प्रचलित किया गया एवं सम्भवत:तंत्र वाद्य में सवालजवाब नृत्य से प्रेरणा प्राप्त कर किया जाने लगा।

निष्कर्ष

सृष्टि के कण-कण में लय व्याप्त है। अणु से लेकर विभुतक सभी लय के अधीन हैं। सूर्य, चन्द्र, ग्रह, नक्षत्र, पृथ्वी, जड़-चेतन सभी लयात्मक व्यवहारकेकारण ही अस्तित्व में है। इनमें से एक भी अपने लयात्मक व्यवहार से विमुख हो जाये तो प्रलय तक की स्थिति बन सकती है। अत: संगीत का तो प्राण ही लय है। लय के बिना संगीत की कल्पना ही नहीं की जा सकती। संगीत चाहे कोई भी हो। कोई भी यानी लोक संगीत, गजल, गीत, भजन, चैती,कजरी, ठुमरी, शास्त्रीय संगीत होयाशास्त्रीयसंगीतगायनहोयावादनहो, चाहे नृत्य सभी में लय का प्राणों के रूप में प्रयोग होता है। बस अंतर है, तो केवल लय के व्यवहार का । जैसे - शास्त्रीय संगीत की गायन विधा में ख्याल गायन को हो तो बड़े ख्याल में अतिविलम्बित या विलम्बितलय और यदि छोटे ख्याल की बात करें तो मध्य लय का प्रयोग होता है। ख्याल गायन का एक अंग तराना भी है। इसमें द्रुत लय का प्रयोग होता है। संगीत चाहे कोई भी हो उसी के अनुरूप ही लय का प्रयोग होता है, तभी वह संगीत अपना परिचय स्वयं बनजाता है।

संदर्भ

तुलसी राम देवांगन (1976), भक्ति संगीत अंक, संगीत कार्यालय, हाथरस, उ.प्र., पृष्ठ संख्या 18.

टी. आर. शुक्ला (1998-99), ताल तरंग, बुक डिपो, बड़ा बाजार, बरेली, उ.प्र., पृष्ठ संख्या 17.
पं॰श्रीराम शर्मा आचार्य (2013), शब्द ब्रह्म-नाद ब्रह्म, अखण्ड ज्योति संस्थान, मथुरा, उ.प्र., पृष्ठ संख्या 5.22.
डॉ॰लक्ष्मीनारयण गर्ग (2004), राग विशारद भाग-1, संगीत कार्यालय, हाथरस, उ.प्र., पृष्ठ संख्या 11.
बसंत (2010), संगीत विशारद, संगीत कार्यालय, हाथरस, उ.प्र., पृष्ठ संख्या 33.
डॉ॰ मनोहर भालचन्द्रराव मराठे (1991), ताल वाद्य शास्त्र, शर्मा पुस्तक सदन, पाटनकर बाजार, लश्कर, ग्वालियर, म.प्र., पृष्ठ संख्या 64.
स्व. पं. सत्यनारयण वशिष्ठ (1994), तबले पर दिल्ली पूरब, संगीत कार्यालय, हाथरस, उ.प्र., पृष्ठ संख्या 13.
डॉ॰ मनोहर भालचन्द्रराव मराठे (1991), ताल वाद्य शास्त्र, शर्मा पुस्तक सदन, पाटनका बाजार, लश्कर, ग्वालियर, म.प्र., पृष्ठ संख्या 60.
गुरुनाथ शिवपुरी (2005), लय शास्त्र, मध्य प्रदेश हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, रवीन्द्रनाथ्र ठाकुर मार्ग, ज्ञानगंगा, भोपाल, म.प्र., पृष्ठ संख्या 11,
डॉ॰मनोहर भालचन्द्रराव मराठे (1991), ताल वाद्य शास्त्र, शर्मा पुस्तक सदन, पाटनका बाजार, लश्कर, ग्वालियरए म.प्र., पृष्ठ संख्या 65,
डॉ. विजय कृष्ण (2011), पाठ्यक्रम-संगीत तबला, परास्नातक अध्ययन सामग्री, द्वितीय खण्ड-ईकाई 1, उत्तराखण्ड मुक्त विश्वविद्यालय, हल्दवानी नैनीताल.
भगवतशरण शर्मा (2002), ताल प्रकाश, संगीत कार्यालय, हाथरस, उ.प्र., पृष्ठ संख्या 65.
डॉ. विजय कृष्ण (2011), पाठ्यक्रम-संगीत तबला, परास्नातक अध्ययन सामग्री, द्वितीय खण्ड-ईकाई 3, उत्तराखण्ड मुक्त विश्वविद्यालय, हल्दवानी नैनीताल.